महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम की पीएच.डी की उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समसामयिक समस्यायें : एक अध्ययन

मानवीय संवेदना से निसृत साहित्य समाज का ही अंग है। व्यक्ति, परिवार, धर्म, संस्कृति, कानून, जाति और आम आदमी के विभिन्न रूप साहित्य से पोल खोलकर उभर आते हैं। इसलिए समाज और साहित्य का आपसी संबंध प्रगाढ़ है। अतः समसामयिक हिन्दी साहित्य परिवर्तित भारतीय समाज एवं उसके प्रभाव से निसृत संकटों का अइना है। यह विधा भारतीय उच्च-मध्य-निम्न वर्गीय जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों की ओर सतर्क है। दरअसल समसामयिक हिन्दी उपन्यास भारतीय जीवन की सांप्रदायिक एवं राजनैतिक अराजकता की खतरनाक स्थितियों की आँखों देखी बयानी है। हिन्दी उपन्यासों में समसामयिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। उपन्यास हमेशा समय और संवेदना की वाहिका है। इसमें मानवीय जीवन के तमाम पक्षों की तलाश है।

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आस्था पर अडिग भारतीय समाज में भूमंडलीकरण से तब्दीलें आ जाती हैं। इनके तासीर से समुत्थ समस्यायें उपन्यासकारों का मुख्य ध्येय है। ऐसे प्रभावों के कारण समाज में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक बदलाव आ रहा है। मूल्य-संघटन से समाज के विभिन्न स्तरों पर समस्यायें बढ़ रही हैं। न्याय एवं हक से वंचित आम आदमी के मानसिक एवं भौतिक यातनाओं का यथार्थ परिवेश हिन्दी उपन्यासों में दृष्टिगोचर है। भ्रष्टाचार से युक्त सत्ता एवं राजनीति की विद्रूपतायें समसामयिक मुद्दे ही हैं। दरअसल समकालीन समाज के वैयक्तिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और दलित संघर्षों की मार्मिक अभिव्यक्ति हिन्दी उपन्यासों में की गयी हैं। वैश्वीकरण, बाज़ारीकरण,

उपभोग संस्कृति और नव उपनिवेशवाद से उत्पन्न तमाम विवशतायें इन उपन्यासों की सृजनभूमि हैं। इनमें मानव की निराशा, वेदना, व्यथा, पीडा, कुण्ठा, एकाकीपन, अजनबीपन, अकेलापन और मृत्युबोध का विचार देखा जा सकता है। इसप्रकार हिन्दी उपन्यास जीवन की संकीर्णताओं तथा संवेदनात्मक विपन्नताओं को अपनाकर आगे बढ़ रहा है। इसमें समाज के हर माहौल में व्याप्त समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।

समसामयिक जीवन-सच्चाइयों को खोजनेवाली मैत्रेयी पुष्पा ने हिन्दी महिला उपन्यासकारों में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है। वे भोगे हुए यथार्थ का सपाट बयान करनेवाली रचनाकार हैं। उन्होंने ताकतवर नारी पात्रों से हिन्दी उपन्यासों को नया आयाम दिया है। कथ्य, घटना और कल्पना से निर्मित उनकी रचनायें भारत के ग्रामीण किसान औरत का परिवर्तनगामी दृष्टिकोण है। इनमें ग्रामीण परिवेश के बल पर समकालीन समस्याओं की मार्मिक अभिव्यक्ति की गयी है। परंपरागत भारतीय जीवन, समसामयिक भारतीय समाज और शहरी मध्यवर्ग की शिनाख्त लेखिका का जन्म 30 नवंबर 1944 ई में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में हुआ। झाँसी जिले के खिल्ली गाँव में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। एम.ए. के बाद वे शादी-शुदा बन गयीं। तीन बेटियों को डाक्टर बनाने के बाद वे साहित्य सृजन की ओर मुड गयीं। वे कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्कृति और राजनीति के क्षेत्रों की गतिविधियों से निसृत संकटों के विभिन्न माहौल उनके उपन्यासों की धुरी है। अतः उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त समसामयिक समस्याओं के अध्ययन का प्रयास इस शोध प्रबंध में किया गया है।

'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समसामयिक समस्यायें : एक अध्ययन' शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित हैं। पहला अध्याय है - 'समसामयिक समाज और उपन्यास की रूपरेखा'। इस अध्याय में समसामयिकता और समाज के विभिन्न पक्षों का आपसी संबंध और उससे उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। समाज

के विभिन्न पहलुओं में होनेवाले बदलाव और इससे निसृत संघर्षों की ओर इस अध्याय में दृष्टिपात किया गया है।

समसामयिकता का केन्द्र मानव के युगबोध और समाज की माँग हैं। समकालीनता मनुष्य के अपने जीवित समय का बोध है। इसलिए साहित्यकार काल की आवश्यकता के अनुसार समसामयिक बनता है। समसामयिक मनुष्य की नियति है कि बदलते परिवेश में जीवन की चुनौतियों का निहत्थी होकर सामना करना। अतः काल और सामाजिक बदलाव के संघर्षों के प्रति साहित्यकार सजग होता है। समकालीन इंटरनेट युग में मानवीय संवेदनायें खो जाने के साथ मौलिक मूल्य-विघटन हो रहा है। प्रखर मूल्य हीनता से समाज के विभिन्न स्तर पर समस्यायें तीव्र बन जा रही हैं क्योंकि भ्रष्टाचार और शोषण बढ़ रहे हैं। सत्ता एवं राजनीति की विद्रूपतायें समसामयिक मुद्दे ही हैं। सिफारिश, लाँच, घूसखोर, घूसपच्चडों से सत्ता वर्ग दूषित हैं। इसलिए आज जो सत्ता में विराजते हैं, कल उन्हें जेल जाना पड़ता है। डाकुओं के हाथों में अधिकार सौंप दिया जाता है। ऐसी सडी हुई हरकतों से देश की संतुलित प्रगति आसान नहीं है। देश के सामाजिक तनासुब खो जानेवाले विभिन्न परिवेश लेखिका के उपन्यासों का सदर्य है। सांस्कृतिक गतिशीलता से समाज में जो तब्दीलें आती हैं, उनकी ओर उपन्यास विधा जागरूक है। इनके साथ समसामयिकता के बहुआयामी बिंदुओं पर पहले अध्याय में दृष्टि डाली गयी है। दरअसल यह वर्तमान समय से संबंधित एक साहित्यिक प्रक्रिया है। इसका कोई निश्चित सीमा निर्धारण करना असंभव है। अतीत के पुट के साथ वर्तमान बदलाव और बदलते परिवेश से निसृत संघर्ष समसामयिकता का पक्ष हो सकता है।

इसप्रकार इस शोध प्रबंध के पहले अध्याय में समसामयिक समस्यायें और समसामयिक हिन्दी उपन्यास के आपसी सरोकार को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ समाज के विभिन्न पहलुओं में समय के बदलाव से होनेवाले परिवर्तन से निसृत समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।

'मैत्रेयी पुष्पा की सृजनात्मकता' इस शोध प्रबंध का दूसरा अध्याय है। इस अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के वैयक्तिक जीवन के विभिन्न आयामों का समेटन किया गया है। उनके जीवन परिवेश की ओर प्रकाश डालने के साथ विभिन्न दृष्टिकोणों को स्पष्ट करने का परिश्रम किया गया है। गृहस्थी के चार दीवारी को लाँघकर उनके साहित्यिक पदार्पण के विवरण के साथ उपन्यासों के कथातन्तुओं की ओर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

समसामयिक मानवजीवन के विभिन्न परिवेशों को सामने रखकर लेखिका ने निजी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति की है। भोगे हुए यथार्थ से नया रास्ता तलाशनेवाले दृढ़ पात्रों की ताकत उनके उपन्यासों की विशेषता है। उन्होंने स्त्री का पक्षधर बनकर महिला जीवन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष को स्पष्ट किया है। उनकी राय है कि औरत को जीवन में इज्जत शादी से नहीं, सार्थक श्रम से मिलती है। स्वयं फैसला लेने की असमर्थता ही स्त्री की विडंबना का मूलकारण है। इसलिए फैसला लेनेवाली ताकतवर नारियों की लंबी कतार उनके उपन्यासों का केन्द्रबिन्दु है। लीक से हटकर सोचने की क्षमता लेखिका में बचपन से दृष्टिगोचर है। लोकगीत एवं गीतकथाओं से वे प्रभावित हैं। अतः उनके नारी-पात्र आदर्श के ढाँचे के अनुरूप नहीं है। उनकी अभिव्यक्ति परंपरागत ढंग की तरह नहीं है। उनकी अभिव्यंजना में एक प्रकार की दुस्साहसिकता देखी जा सकती है। इसलिए उनके नारी-पात्र पुश्तैनी स्वीकृत नैतिक मानदंडों का अतिक्रमण करके नये-नये रास्ते तलाशते हैं क्योंकि सामाजिक सुधार मानसिक परिवर्तन से संपन्न होता है।

लेखिका बुंदेलखंड के ग्रामीण परिवेश में पली हुई है। वहाँ से उनको सृजन प्रेरणा मिली है। वे किसान औरतों के संघर्षों की शिनाख्त रचनाकार हैं। वे बचपन से विद्रोही बिंदास लड़की हैं। ब्याह से उनका यह रूप परिवर्तित हुआ था। इसके बाद वे स्वयं आदर्श के ढाँचे में ढ़ाली गयीं। पति की इच्छा के अनुसार आदर्श पत्नी बन जाने की कोशिश उन्होंने की। फिलहाल यह आदर्श रूप बाह्य स्तर पर है, आन्तरिक स्तर पर वे इस रूप को प्रश्न करनेवाली हैं। ग्रामीण सभ्यता का असर उनमें अथाह ढंग से देखा जा सकता है। इसलिए

आदर्श पत्नी बनने में वे सफल हुई हैं। एक ओर वे कुशल गृहिणी है तो दूसरी ओर विद्रोह का सोच विचार करनेवाली भी हैं।

विद्रोह एवं ताकत लेखिका की निजी शख्सियत है। ये गुण माँ से उन्होंने अर्जित किये हैं। उपन्यासों के पात्रों द्वारा उनकी ऐसी शख्सियत का पर्दाफाश होने लगा। अपनी इस भावात्मक पक्ष को वे समाज के लिए सौंप देती हैं जो चेतना संपन्न, जीवंत और दूरगामी दृष्टिकोणों से भरा हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा के एकांत बचपन, प्रताड़ित कौमार्य और विवाह जीवन के तजुर्बों से उनका सृजन पक्ष उभर आता है। बच्चियों की प्रेरणा से वे साहित्य जगत की ओर मुड गयी हैं।

नारी के विभिन्न धरातलों की ओर लेखिका सचेत है। उनकी रचनायें समष्टिगत संघर्षों का संज्ञापन हैं। समसामयिक समाज के विभिन्न माहौल पर सटे हुए मामलों को उन्होंने संचित किया है। इन उपन्यासों में समकालीन समाज के विभिन्न परिवेशों में दर्शनीय समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। लेखिका की तमाम रचनायें पाठकों पर सहृदय भावना जगाने में सक्षम हैं। ये रचनायें समस्याओं की सपाट बयानी हैं क्योंकि जनता की समस्याओं को पहचानकर पात्रों के दिल की गहराई तक उतरकर संघर्षों को प्रस्तुत करने में लेखिका निपुण है। उनमें तथ्यों के यथार्थ पहचान के लिए अनुसंधानात्मक परख का व्यक्तित्व विद्यमान है। उन्होंने कृत्रिमता के बिना ही समस्याओं से घिरे परिवेशों का संयोजन किया है। परिवेशों से निकलती समसामयिक समस्याओं का अनूठा संयोग उनकी रचनाओं की खासियत है।

इसप्रकार इस शोध प्रबंध के दूसरे अध्याय में लेखिका की सृजनात्मक पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उनकी सृजनात्मक पृष्ठभूमि गाँव होने के कारण वहाँ के परिवेशों के द्वारा समसामयिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में उनके वैयक्तिक पक्षों के साथ उपन्यासों के कथाबिन्दुओं का अनुशीलन किया गया है।

'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी, व्यक्ति और परिवार की समस्यायें' शीर्षक तृतीय अध्याय में उनके उपन्यासों में चित्रित वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। नारी की ओर बढ़ते शोषण, हत्या और बलात्कार के प्रति उनके उपन्यास सतर्क हैं। इन उपन्यासों में औसत किसान विधवाओं के मामलों का पर्दाफाश किया गया है। उनकी फरोतनी और सांस्कृतिक जकड़नों का यथार्थ परिवेश इन उपन्यासों में दृष्टिगोचर है। केवल किसान ग्रामीण परिवेश की ही नहीं, आधुनिक शिक्षित विवाहित और पेशे से जुडी महिलाओं के संत्रासों को उकेरने में उनके उपन्यास सफल हुए हैं। उनके पात्र अच्छे एवं बुरे गुणों से संपन्न हैं क्योंकि मानव में ऐसी आदतें देखी जा सकती हैं। व्यक्ति, परिवार और समाज की चुनौतियों का सामने करके आगे बढ़ने की ताकत लेखिका के नारी पात्रों की खासियत है। ये नारियाँ परिवर्तन के पथ-प्रदर्शक बनने की पतवार पकडनेवालियाँ हैं। चारदीवारी के भीतर के प्रश्न ही नहीं, इन नारी पात्रों के द्वारा समाज के सम्मुख उनकी चुनौतियों का यथार्थ परिवेश लेखिका के उपन्यासों में स्पष्ट किया गया है।

वैयक्तिक तहजीब की नींव परिवार है। बदलते हुए समकालीन परिवेश में वैयक्तिक उलझनों से पारिवारिक संबंध की तख्ता उलटती है। लेखिका के उपन्यासों में पारिवारिक विघटन से होनेवाले संघर्ष अंकित किया गया है। ऐसे नष्ट-भ्रष्ट पारिवारिक परिवेश में पलनेवाली लड़कियों और बच्चों के मानसिक घुटन इन रचनाओं का और एक मुद्दा है। बच्चे और माँ-बाप, पति-पत्नी, सास-बहू, ससुराल-मायके और भाइयों के बीच होनेवाले बखेड़ों की सहज अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में दर्शनीय है। लड़कियों की चुनौतियों और गृहिणियों के संघर्षों के साथ दुरुश्त अनुसालों से जर्जरित वैयक्तिक एवं पारिवारिक हेरफेर इन उपन्यासों का मुख्य विषय ही है। सदियों से रूढ़िग्रस्त सामाजिक एवं पारिवारिक विधानों का परिवर्तन इनका प्रमुख इरादा है। उनके चरित्रों के भीतरी साहसी सोच-विचार पुश्तैनी नहीं, नवीन जोखन का आरंभ है। बदलते हुए परिवेश में पारिवारिक एवं सामाजिक तनासुब खो रहा है। मूल्यों का अपचय हो रहा है। अतः परंपरागत भारतीय समाज में

सांस्कृतिक-संकट बढ़ रहा है। ऐसे परिवेशों के साथ लेखिका के उपन्यासों में पुराने समाज का पुट देखा जा सकता है। इतिहास की घटनाओं की नयी तलाश भी उनमें दर्शनीय है। अतः इन रचनाओं में विभिन्न कालखंडों के विभिन्न परिवेश एवं समस्याओं की ओर प्रकाश डाला गया है। दरअसल सदियों से जमी हुई सिलसिले का अतिक्रमण करके उनके पात्र सैर करते हैं। इससे संघर्ष करते वक्त ये पात्र नया रास्ता खोजकर आगे बढ़ते हैं।

इसप्रकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की शिक्षा, ब्याह, बलात्कार, हत्या, शोषण, आत्महत्या और विधवा संबंधी विभिन्न समस्याओं को इस अध्याय में समाहित किया गया है। स्त्री की वेदना एवं यंत्रणाओं का मार्मिक वृत्तांत उनके उपन्यासों में उभर आने का रेखांकन किया गया है। साथ ही साथ वैयक्तिक घुटनों के विभिन्न परिवेशों का अनुशीलन इसमें किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में पारिवारिक गतिविधियों से उत्पन्न संघर्षों की अभिव्यंजना की गयी है।

'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : राजनैतिक मुद्दे, साँस्कृतिक-संकट और आम आदमी की समस्यायें' - यह इस शोध प्रबंध के चौथे और अंतिम अध्याय का शीर्षक है। राजनीति की ओड में होनेवाले अनैतिक व्यवहारों एवं अत्याचारों तथा चुनाव में होनेवाली भ्रष्टाचारिता उनके उपन्यासों का मुख्य विषय है। इस अध्याय में उन विषयों की ओर प्रकाश डाला गया है।

वैज्ञानिक प्रगति से संपन्न समसामयिक समाज की मानसिकता संकीर्ण है। अतः धार्मिक और जातिगत विडंबनायें बढ़ रही हैं। साँस्कृतिक विरासत से विचलित भारतीय समाज में बढ़ती विकृतियों की ओर लेखिका का उपन्यास सजग है क्योंकि संस्कृति समाज की निजी संपत्ति है जो समूहों का दर्पण है। शहर और गाँव के फर्क के साथ वहाँ के विभिन्न परिवेश एवं संघर्ष उनके उपन्यासों के दायरे में दृष्टिगोचर हैं। समकालीन भूमंडलीकरण एवं उपनिवेशवाद के प्रभाव से समाज के हर माहौल पर बेईमानी, भ्रष्टाचार, मूल्य-संकट,

सांस्कृतिक अपचय और कुदाँव फैले हुए हैं। ये सब मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का कथ्य पक्ष हैं। पत्रकारिता और साहित्य क्षेत्र की साजिशें उनके उपन्यासों में खुले ढंग से प्रस्तुत की गयी हैं। इनका विश्लेषण इस अध्याय का अंश है।

बदबूदार राजनैतिक क्षेत्र में व्याप्त हत्या-कत्ल, दावपेंच, नैरंगी, सांप्रदायिकता और बूथ कैप्चरिंग का अनूठा वर्णन लेखिका के उपन्यासों का मुख्य मुद्दा है। सत्ता पर कब्जा करके उस धुरी से भ्रमण करनेवाली राजनैतिक अराजकताओं को उनके उपन्यासों में स्पष्ट किया गया है। ऐसे सडायंध तथ्यों से युक्त सत्य इन रचनाओं का मुख्य आयाम है। दरअसल ऐसी अराजकताओं से सामाजिक नैतिकता खो रही है। मंत्रियों से लेकर मातहत तक रिश्वत का भागीदार है। राजनेता वर्ग स्वार्थपूर्ण व्यवहार से आर्थिक लाभान्वित पा लेते हैं। लेखिका के उपन्यासों में रेखांकित ऐसे परिवेशों का समेटन इस अध्याय का और एक पक्ष है।

देश की आर्थिक स्थिरता आम आदमी पर निर्भर है। किसान, मज़दूर और दलित ज़िन्दगी की जिजीविषा एवं जीवन-संघर्ष मैत्रेयी के उपन्यासों का अन्य गल्प है। इनमें जेरबारी से पीडित आम आदमियों के जीवन की तमाम परेशानियों पर प्रकाश डाला गया है। जाजिब के शिकार होनेवाले निरीह वर्गों के तसदीहों का चित्रण इनमें किया गया है। इन रचनाओं में किसानों की फलाहतों की परेशानियों और मज़दूरों की विपन्नताओं की अभिव्यंजना की गयी है। शोषण से शिकस्ते निरीह वर्गों की मुक्ति लेखिका का लक्ष्य है। उनके तमाम उपन्यासों से निसृत फ़रागत की आवाज़ बने बनाये सामाजिक ढर्रे से बाहर निकलने की होती है। इनमें न्याय का स्वर भरा हुआ है क्योंकि हक एवं न्याय से वंचित आम आदमी के सम्मुख आर्थिक अस्थिरता से जर्जरित भविष्य लटक रहा है। अतः उनके तमाम जीवन परिवेशों के सोखन, जीक, दौन-दोच की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति उनके उपन्यासों में की गयी है।

इसप्रकार इस शोध प्रबंध के अंतिम अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में रेखांकित राजनैतिक अराजकता, सांस्कृतिक विकृतियाँ एवं संकट सामाजिक अनैतिकता और सर्वहारावर्गों की फजीहतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार दिया गया है, जिसमें मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व और सृजनात्मक पक्ष के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है। उनके उपन्यासों में मुखरित रिहाई के इरादे पर दृष्टि डाली गयी है। यथार्थ के पुट से निसृत उनके औपन्यासिक कथापात्रों के द्वारा प्रस्फुटित समसामयिक समस्याओं को अध्ययन के केन्द्र में रखा गया है। इस शोध प्रबंध के उपसंहार में लेखिका के उपन्यासों से समुत्थ प्रखर संघर्षों का विश्लेषणात्मक बिंदुओं को समाहित किया गया है। पूरे उपन्यासों के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों को उपसंहार में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

इसप्रकार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रस्तुत समसामयिक समस्याओं की ओर प्रकाश डालने का प्रयत्न इस शोध प्रबंध में किया गया है। समकालीन भारत के विभिन्न स्रोतों में व्याप्त भिन्न-भिन्न विद्रूपतायें लेखिका के सृजन का केन्द्र है। विशेषतः ग्रामीण पृष्ठभूमि की प्रवक्ता है मैत्रेयी पुष्पा। समाज जिन समस्याओं को झेल रहा है, उनके उपन्यास उन संकटों का दस्तावेज ही हैं। अतः लेखिका के उपन्यासों में चित्रित समस्यायें समसामयिक समाज का यथार्थ तथ्य ही है। इसलिए लेखिका के तमाम उपन्यास समसामयिक विपन्नताओं का प्रलेख है। अत्यन्त संवेदनशील उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा की रचनाधर्मिता को परखने का प्रयास इस शोध प्रबंध के अध्ययन का एक पक्ष है। समकालीन समाज में व्याप्त सभी समस्यायें लेखिका के उपन्यासों में पूरी तरह न देखी जा सकती हैं, बल्कि जो समस्यायें उनके उपन्यासों में चित्रित हैं, वे समसामयिक समाज में कहीं-कहीं प्राप्त होती हैं। लेखिका के उपन्यासों में उभर आये समसामयिक जीवन की समस्याओं के हर पक्ष पर समग्र दृष्टि डालने की कोशिश 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समसामयिक समस्यायें : एक अध्ययन' शीर्षक इस शोध प्रबंध में की गयी है।

Name of the Institution where the Research Programme will be under-taken	:	Department of Hindi Maharaja's College Ernakulam
Name and Signature of the Research Student	:	 **LIBY CHERIAN**

NAME OF THE RESEARCH TOPIC

MAITREYI PUSHPA KE UPANYASON MEIN SAMSAMAYIK SAMSYAEIN : EK ADHYAYAN

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समसामयिक समस्यायें : एक अध्ययन

Name and Signature of the Research Supervising Teacher

Dr. K. MOHANAN PILLAI
Associate Professor in Hindi
M.A. College
Kothamangalam
(Research Supervising Teacher
Dept. of Hindi
Maharaja's College, Ernakulam)